I. उत्पादन

2009-10 की पहली तिमाही में देखी गई जीडीपी वृद्धि में सुधार दूसरी तिमाही में भी बना रहा जो औद्योगिक निष्पादन में मजबूत सुधार और राजकोषीय व्यय से प्रेरित सेवा कार्यों से तेज हुआ था। कृषि क्षेत्र का निष्पादन नरम बना रहा जिसका कारण कम दक्षिणी-पश्चिमी मानसून का प्रभाव था, हालांकि इस प्रभाव का मुख्य भाग वर्ष की तीसरी तिमाही जीडीपी में दिखेगा। औद्योगिक सुधार ने पिछले कुछ महीनों में तेजी दर्शाने के अलावा यह व्यापक आधार का बन गया। सेवा क्षेत्र कार्यों के अधिकांश मुख्य संकेतक भी वृद्धि की गति में सुधार दर्शाते हैं।

I.1 भारतीय अर्थव्यवस्था ने 2008-09 की दूसरी छमाही में देखी गई मंदी के संबंध में 2009-10 की दूसरी तिमाही (ति2) में आर्थिक वृद्धि में दृढ़ सुधार दर्शाया। पहली तिमाही (ति1)में शुरू हुआ जीडीपी में सुधार 2009-10 की ति2 में तेज हो गया जो औद्योगिक उत्पादन में मजबूत सुधार और सेवा क्षेत्र के बेहतर निष्पादन से प्रेरित था। केंद्रीय सांख्यिकी संगठन (सीएसओ) के अनुमान के अनुसार, 2009-10 की ति1 की 6.1 प्रतिशत वास्तविक जीडीपी वृद्धि 2009-10 की ति2 में बढ़कर 7.9 प्रतिशत हो गई जो 2008-09 की इसी अवधि में दर्ज 7.7 प्रतिशत से भी उच्च थी। ति2 में अपेक्षा से अधिक वृद्धि ने वास्तविक जीडीपी वृद्धि को 2009-10 की पहली छमाही में 2008-09 की इसी अवधि के 7.8 प्रतिशत की तुलना में 7.0 प्रतिशत रखा (सारणी 1.1)।

I.2 वास्तविक जीडीपी वृद्धि मुख्यत: औद्योगिक और सेवा क्षेत्र की वृद्धि में सुधार से प्रेरित थी, वैश्विक मंदी

सारणी I.1: वास्तविक जीडीपी की वृद्धि दर@

(प्रतिशत)

क्षेत्र	2007-08*	2008-09#	2008-09				2009-10		अप्रैल-सितंबर	
			ति1	ति2	ति3	ति4	ति1	ति2	2008-09	2009-10
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
1. कृषि और संबद्ध कार्यकलाप	**4.9**	**1.6**	**3.0**	**2.7**	**-0.8**	**2.7**	**2.4**	**0.9**	**2.9**	**1.7**
	(17.8)	**(17.0)**								
2. उद्योग	**7.4**	**2.6**	**5.1**	**4.8**	**1.6**	**-0.5**	**4.2**	**9.0**	**5.0**	**6.6**
	(19.2)	**(18.5)**								
2.1 खनन एवं उत्खनन	3.3	3.6	4.6	3.7	4.9	1.6	7.9	9.5	4.2	8.7
2.2 विनिर्माण	8.2	2.4	5.5	5.1	0.9	-1.4	3.4	9.2	5.3	6.3
2.3 बिजली, गैस और जलापूर्ति	5.3	3.4	2.7	3.8	3.5	3.6	6.2	7.4	3.3	6.8
3. सेवाएँ	**10.8**	**9.4**	**10.0**	**9.8**	**9.5**	**8.4**	**7.7**	**9.0**	**9.9**	**8.3**
	(63.0)	**(64.5)**								
3.1 व्यापार, होटल, रेस्तराँ, परिवहन, भंडारण और संचार	12.4	9.0	13.0	12.1	5.9	6.3	8.1	8.5	12.5	8.3
3.2 वित्तपोषण, बीमा, स्थावर संपदा और कारोबारी सेवाएँ	11.7	7.8	6.9	6.4	8.3	9.5	8.1	7.7	6.6	7.9
3.3 सामुदायिक, सामाजिक और वैयक्तिक सेवाएँ	6.8	13.1	8.2	9.0	22.5	12.5	6.8	12.7	8.6	9.9
3.4 निर्माण	10.1	7.2	8.4	9.6	4.2	6.8	7.1	6.5	9.0	6.8
4. कारक लागत पर वास्तविक जीडीपी	**9.0**	**6.7**	**7.8**	**7.7**	**5.8**	**5.8**	**6.1**	**7.9**	**7.8**	**7.0**

ज्ञापन: (राशि करोड़ रुपए)

क. **कारक लागत पर जीडीपी (1999-2000)**	31,29,717	33,39,375
ख. **चालू बाजार कीमतों पर जीडीपी**	47,23,400	53,21,753

@ : 1999-2000 की कीमतों पर। * : त्वरित अनुमान। # : संशोधित अनुमान।
टिप्पणी : कोष्ठक के आँकड़े वास्तविक जीडीपी में हिस्सा दर्शाते हैं।
स्रोत : केंद्रीय सांख्यिकीय संगठन।

की पृष्ठभूमि में ध्यान देने योग्य गिरावट की अवधि के बाद (चार्ट I.1)। कृषि क्षेत्र ने 2009-10 की ति2 में वृद्धि में कमी देखी जो आंशिक रूप से कम दक्षिणी-पश्चिमी मानसून के प्रभाव को दर्शाती है।

चार्ट I.1: वृद्धी में क्षेत्रीय योगदान

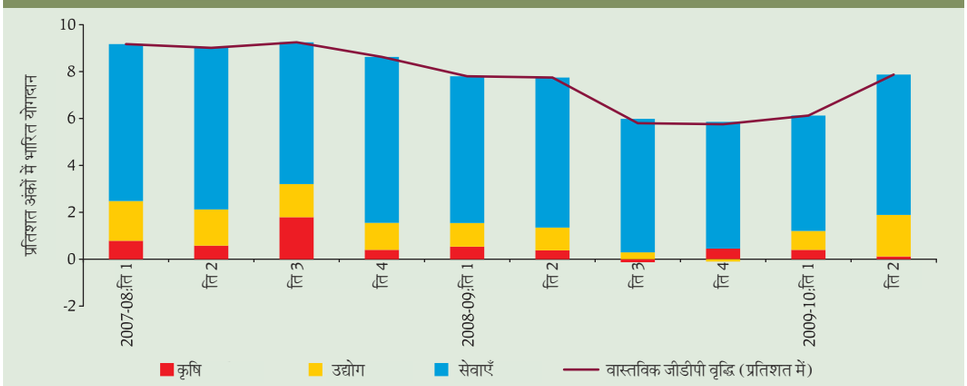

कृषि की स्थिति

I.3 दक्षिणी-पश्चिमी मानसून (जून-सितंबर), जो खरीफ फसल के वर्षा पर निर्भर उत्पादन को काफी हद तक प्रभावित करता है, 1972 से अब तक 2009 में दुर्बलतम था। मौसम की संचित वर्षा पिछले वर्ष के समकाल के सामान्य से 2 प्रतिशत कम की तुलना में सामान्य से 23 प्रतिशत कम थी। 13 राज्यों में 316 जिलों में सूखा घोषित किया गया, आंशिक या पूर्ण रूप से। किंतु, उत्तर-पूर्व मानसून (अक्तूबर से दिसंबर 2009) संतोषप्रद रहा है जिसमें संचयी वर्षा पिछले वर्ष के समकाल के सामान्य से 31 प्रतिशत कम की तुलना में सामान्य से 8 प्रतिशत अधिक थी। 36 मौसम उप प्रभागों में से उत्तर-पूर्व मानसून में संचित वर्षा 13 उप प्रभागों में कम/अत्यल्प/शून्य थी (पिछले वर्ष 30 उप प्रभाग) (चार्ट I.2)। जलाशय-स्तर, सिंचाई से संबद्ध कृषि उत्पादन संबंधी आकलन का एक महत्वपूर्ण संकेतक, जुलाई 2009 के प्रारंभ में दर्ज पूर्ण जलाशय-स्तर (एफआरएल) के लगभग 9 प्रतिशत कम से सुधर गया। 14 जनवरी 2010 को, कुल उपयुक्त जल जमाव पिछले वर्ष के समकाल के 49 प्रतिशत की तुलना में 48 प्रतिशत था और पिछले 10 वर्षों का औसत 46 प्रतिशत था।

I.4 कम दक्षिणी-पश्चिमी मानसून, देश के अनेक भागों में अकाल स्थिति के साथ, ने खरीफ बुवाई को प्रतिकूल रूप से प्रभावित किया जो पिछले वर्ष की बुवाई से लगभग 5.3 प्रतिशत कम था। बुवाई क्षेत्र में कमी के अलावा, अनिश्चित वर्षा और कतिपय राज्यों में तात्कालिक बाढ़ ने भी खरीफ फसल को प्रभावित किया होगा। दक्षिणी-पश्चिमी मानसून की विलंबित वापसी और परिणामी भूमि में उच्च आद्रता धारणा ने रबी बुवाई को सुगम बना दिया। अच्छे उत्तर-पूर्व मानसून के कारण रबी फसल के तहत बुवाई का क्षेत्र (15 जनवरी 2010 तक) गत वर्षीय स्तर के करीब रहा है। बुवाई चावल, गेहूं और दालों के बारे में विशेष रूप से उच्च रही है (सारणी 1.2)।

I.5 2008-09 में प्राप्त खाद्यान्न उत्पादन के 233.9 मिलियन टन के रेकार्ड स्तर के आधार पर, 2009-10

चार्ट I.2: दक्षीण-पश्चिम और उत्तर-पूर्व मानसून के दौरान वर्षा

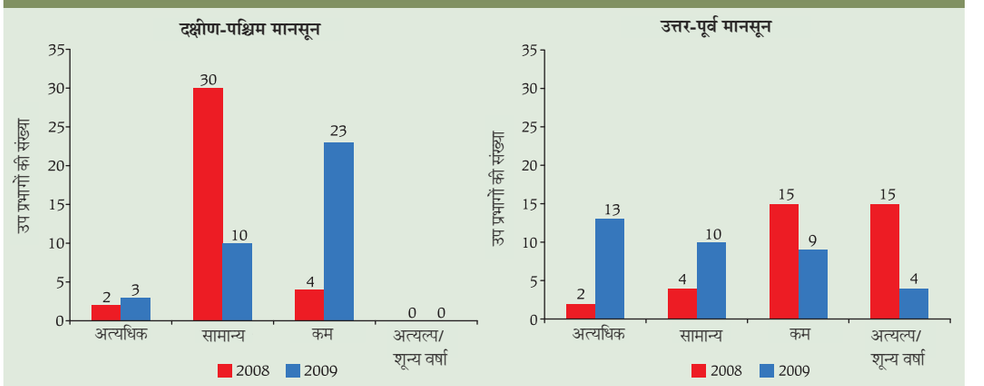

सारणी 1.2: रबी फसल के तहत के बुवाई क्षेत्र में प्रगति

(मिलियन हेक्टेयर)

फसल	सामान्य क्षेत्र	क्षेत्र का कवरेज (जनवरी 15, 2010)			प्रतिशत घट-बढ़
		2008-09	2009-10	घट-बढ़	
1	2	3	4	5	6
चावल	4.0	1.1	1.3	0.2	14.8
गेहूं	27.1	27.5	27.5	0.0	0.0
मोटा अनाज	6.3	6.6	6.3	-0.4	-5.6
जिसमें से:					
जौ	0.6	0.7	0.8	0.0	5.2
जवार	4.8	4.9	4.5	-0.4	-8.5
मक्का	0.9	1.0	1.0	0.0	1.4
कुल दलहन	11.9	12.7	13.5	0.7	5.8
कुल तिलहन	9.5	9.2	8.6	-0.6	-6.8
जिसमें से:					
तोरिया और सरसों	6.5	6.6	6.4	-0.2	-3.4
मूंगफली	0.9	0.6	0.6	0.0	-1.7
सूर्यमुखी	1.3	1.1	0.8	-0.3	-26.5
सभी फसलें	**58.8**	**57.2**	**57.1**	**-0.1**	**-0.2**

स्रोत: कृषि मंत्रालय, भारत सरकार।

के लिए 239.1 मिलियन टन का लक्ष्य रखा गया। किंतु, कृषि मंत्रालय द्वारा जारी 2009-10 के संशोधित प्रथम अग्रिम अनुमान के अनुसार, कुल खरीफ खाद्यान्न और तिलहन उत्पादन कम मानसून का प्रभाव दर्शाते हुए पिछले वर्ष की तुलना में 15.9 प्रतिशत कम हो गया (सारणी 1.3)। फसलवार, उडद, तूवर और कपास को छोड़कर सभी फसलों में कमी की संभावना है। किंतु, दक्षिणी-पश्चिमी मानसून की विलंबित वापसी, उत्तर-पूर्व मानसून में अच्छी प्रगति और बुवाई में सुधार, विशेष रूप से खाद्यान्न में, जिसे रबी उत्पादन बढ़ाने के सरकारी प्रयासों का साथ था, से इस वर्ष समग्र रबी उत्पादन की संभावना अच्छी है। यह अपेक्षा की जा सकती है कि रबी उत्पादन आंशिक रूप से 2008-09 की तरह से कम खरीफ उत्पादन की भरपाई करेगा। सरकार ने यह भी संकेत किया है कि रबी मौसम में 10 मिलियन टन का अतिरिक्त उत्पादन देखा जा सकता है जिसमें 8.5 मिलियन टन खाद्यान्न और 1.5 मिलियन टन तिलहन होगा। रबी फसल

सारणी 1.3 : कृषि उत्पादन

(मिलियन टन)

फसल	2007-08	2008-09 @	2009-10	
			लक्ष्य	उपलब्धि *
1	2	3	4	5
धान	96.7	99.2	100.5	
खरीफ	82.7	84.6	86.0	71.7
रबी	14	14.6	14.5	
गेहूँ	78.6	80.6	79.0	
मोटा अनाज	40.8	39.5	43.1	
खरीफ	31.9	28.3	32.7	22.8
रबी	8.9	11.1	10.5	
दालें	14.8	14.7	16.5	
खरीफ	6.4	4.8	6.5	4.4
रबी	8.4	9.9	10.0	
कुल खाद्यान्न	230.8	233.9	239.1	
खरीफ	121	117.7	125.2	98.8
रबी	109.8	116.2	114.0	
कुल तिलहन	29.8	28.2	31.6	
खरीफ	20.7	17.9	19.4	15.2
रबी	9	10.3	12.2	
गन्ना	348.2	273.9	340.0	249.5
कपास #	25.9	23.2	26.0	23.7
जूट और मेस्ता ##	11.2	10.4	11.2	10.2

@ : वर्ष 2008-09 के लिए चतुर्थ अग्रिम अनुमान।
* : वर्ष 2009-10 के लिए प्रथम अग्रिम अनुमान।
\# : प्रत्येक 170 कि.ग्रा. की मिलियन गांठे।
\#\# : प्रत्येक 180 कि.ग्रा. की मिलियन गांठे।
स्रोत : कृषि मंत्रालय, भारत सरकार।

के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) में सरकार द्वारा हाल ही में (अक्तूबर में) की गई वृद्धि से रबी फसल का उत्पादन गहन कोने की संभावना है। किंतु, 2009-10 में खरीफ उत्पादन में अनुमानित गिरावट और हाल के वर्षों की एमएसपी वृद्धि ने खाद्य मुद्रास्फीति पर दबाव बढ़ाने में योगदान दिया। कृषि वृद्धि के संदर्भ में, इस क्षेत्र को ''संबद्ध क्षेत्र'' से सहायता प्राप्त होने की अपेक्षा है जिसमें बागवानी, पशुधन तथा मत्स्य पालन शामिल हैं जो हाल के वर्षों में5 प्रतिशत से अधिक दर पर बढ़ रहे हैं।

खाद्य प्रबंधन

I.6 2009-10 में (18 जनवरी 2010 तक) खाद्यान्न (चावल और गेहूं) की सरकारी खरीद पिछले वर्ष के समकाल की तुलना में अधिक थी (सारणी 1.4)। भारतीय खाद्य निगम (एफसीआइ) और अन्य सरकारी संस्थाओं के पास का कुल खाद्यान्न स्टॉक 1 जून 2009 को 54.8 मिलियन टन के शीर्ष पर पहुंच गया। तब से, सरकारी खरीद की तुलना में खाद्यान्न उठाव अधिक होने से स्टॉक कम होने लगा। 1 जनवरी 2010 को, स्टॉक 47.7 प्रतिशत था जिसमें चावल और गेहूं दोनों का स्टॉक

सारणी 1.4: खाद्यान्न भंडार का प्रबंधन

(मिलियन टन)

माह/वर्ष	खाद्यान्नों का आरंभिक स्टॉक			खाद्यान्नों की खरीद			खाद्यान्नों का उठाव					मानदंड
	चावल	गेहूँ	कुल	चावल	गेहूँ	कुल	पीडीएस	ओडब्लूएस	ओएमएस देशी	निर्यात	कुल	
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13
2008-09	13.8	5.8	19.8	32.8	22.7	55.5	34.9	3.4	1.2	0.0	39.5	
2008-09@	13.8	5.8	19.8	21.0	22.7	43.7	19.4	1.7	0.0	0.0	21.1	
2009-10@	21.6	13.4	35.6	25.3	25.4	50.7	25.4	2.0	0.0	0.0	27.4	
2008												
अप्रैल	13.8	5.8	19.8	1.1	14.2	15.3	2.7	0.0	0.0	0.0	2.8	16.2
जुलाई	11.3	24.9	36.3	0.1	0.2	0.3	3.0	0.3	0.0	0.0	3.1	26.9
अक्तूबर	7.9	22.0	30.0	8.1	0.0	8.1	2.8	0.1	0.0	0.0	2.8	16.2
दिसंबर	15.6	19.6	35.5	4.2	0.0	4.2	3.0	0.5	0.2	0.0	3.6	
2009												
जनवरी	17.6	18.2	36.2	4.8	0.0	4.8	3.0	0.2	0.3	0.0	3.4	20.0
अप्रैल	21.6	13.4	35.6	1.4	19.4	20.8	3.3	0.2	0.0	0.0	3.5	16.2
जून	20.4	33.1	54.8	1.3	1.1	2.4	3.3	0.4	0.0	0.0	3.7	
जुलाई	19.6	32.9	53.2	1.4	0.4	1.8	3.8	0.1	0.0	0.0	3.9	26.9
अक्तूबर	15.4	28.5	44.2	8.4	0.0	8.4	3.7	0.3	0.0	0.0	3.9	16.2
नवंबर	21.6	26.9	48.8	3.6	0.0	3.6	..	..	..	..	..	
दिसंबर	22.9	25.2	48.4	3.4	0.0	3.4	..	..	..	..	..	
2010												
जनवरी *	24.4	23.1	47.7	2.8	0.0	2.8	..	..	..	..	..	20.0

पीडीएस : सार्वजनिक वितरण प्रणाली। ओडब्लूएस : अन्य कल्याणकारी योजनाएँ। ओएमएस : खुला बाजार विक्रय।
.. : अनुपलब्ध @ : जनवरी 18 तक सरकारी खरीद, 30 अक्तूबर तक उठाव। * : 18 जनवरी तक सरकारी खरीद।
स्रोत :उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय, भारत सरकार।

उनके मानदंडों की तुलना में काफी अधिक था। अप्रैल-सितंबर 2009 में खाद्यान्न उठाव मुख्य रूप से लक्ष्यित सार्वजनिक वितरण प्रणाली (टीपीडीएस) और अन्य कल्याण योजनाओं के माध्यम से हुआ था, वहीं अक्तूबर-दिसंबर 2009 की अवधि में, खाद्य वस्तुओं में मुद्रास्फीति के लगातार दबाव को देखते हुए सरकार ने लगभग 1.5 मिलियन टन गेहूं और 0.5 मिलियन टन चावल को खुले बाजार में बिक्री के लिए आबंटित किया था। जनवरी-मार्च 2010 में खुले बाजार में बिक्री के लिए ऐसी ही मात्रा के आबंटन को अनुमोदन दिया गया है। सरकार ने हाल ही में जनवरी-फरवरी 2010 के लिए टीपीडीएस के तहत सरकार ने 2.5 मिलियन टन गेहूं और 1.1 मिलियन टन चावल के तदर्थ आबंटन की घोषणा की है।

औद्योगिक निष्पादन

I.7 औद्योगिक वृद्धि, जो 2008-09 की दूसरी छमाही में काफी कम हो गई थी, ने 2009-10 में मजबूत सुधार दर्शाया, विशेष रूप से जून 2009 से। औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (आइआइपी) ने अगस्त, अक्तूबर और नवंबर 2009 में दो अंकी वृद्धि दर्ज की जो सुधार प्रक्रिया में तेजी दर्शाती है। 2009-10 (अप्रैल-नवंबर 2009) में, औद्योगिक वृद्धि 7.6 प्रतिशत थी, गत वर्ष के समकाल के 4.1 प्रतिशत से काफी अधिक (चार्ट I.3 और सारणी 1.5)। सुधार का नेतृत्व विनिर्माण क्षेत्र ने किया, कुल औद्योगिक वृद्धि में इसका योगदान लगभग 86 प्रतिशत था और इसे खनन तथा बिजली घटकों की सहायता मिली थी। दो-अंकी वर्गीकरण (आइआइपी में 57.2 प्रतिशत भारांक) के तहत 17 में से 12 विनिर्माण उद्योगों द्वारा आइआइपी वृद्धि में योगदान देने के बावजूद, वृद्धि की तेजी कम रही है (सारणी 1.6)। 17 विनिर्माण उद्योगों में से शीर्ष पांच, आइआइपी में 24.1 प्रतिशत संयुक्त भारांक, में 12.7 प्रतिशत वृद्धि हुई और अप्रैल-नवंबर 2009 में आइआइपी वृद्धि में 60.3 प्रतिशत योगदान दिया (चार्ट I.4)। यह दर्शाता है कि सुधार अधिक व्यापक आधारित बनने से और तेजी की गुंजाईश है।

I.8 उपयोग-आधारित श्रेणीकरण के संदर्भ में, अप्रैल-नवंबर 2009 में मूल सामान, मध्यवर्ती सामान और

चार्ट I.3: औद्योगिक उत्पादन सूचकांक में वृद्धि (वर्ष-दर-वर्ष)

सारणी 1.5 : औद्योगिक उत्पादन सूचकांक : उद्योगों का क्षेत्रवार और उपयोग आधारित वर्गीकरण

(प्रतिशत)

उद्योग समूह	आइआइपी में भारांक	वृद्धि दर			भारांकित अंशदान #		
		अप्रैल-मार्च 2008-09	अप्रैल-नवंबर		अप्रैल-मार्च 2008-09	अप्रैल-नवंबर	
			2008-09	2009-10 P		2008-09	2009-10 P
1	2	3	4	5	6	7	8
क्षेत्रवार							
खनन	10.5	2.6	3.4	8.3	6.3	5.4	7.1
विनिर्माण	79.4	2.7	4.2	7.7	85.3	88.5	86.2
बिजली	10.2	2.8	2.8	6.1	8.3	5.9	6.7
उपयोग-आधारित							
मूल वस्तुएं	35.6	2.6	3.6	6.1	28.4	26.5	23.8
पूंजीगत वस्तुएं	9.3	7.3	8.4	7.0	34.1	25.8	12.0
मध्यवर्ती वस्तुएं	26.5	-1.9	-0.7	11.4	-18.4	-4.8	38.5
उपभोक्ता वस्तुएं (क+ख)	28.7	4.7	6.8	6.3	54.2	50.8	25.9
क) उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुएं	5.4	4.5	5.1	21.7	12.4	9.7	22.4
ख) उपभोक्ता गैर टिकाऊ वस्तुएं	23.3	4.8	7.3	1.1	41.7	41.0	3.5
सामान्य	**100.0**	**2.7**	**4.1**	**7.6**	**100.0**	100.0	100.0

अ : अनंतिम।
: पूर्णांकन के कारण हो सकता है कि आंकड़ों का योग 100 न हो।
स्रोत : केंद्रीय सांख्यिकीय संगठन।

उपभोक्ता टिकाऊ सामान की वृद्धि में तेज बढ़त हुई। सुधार की शुरुआत चालू वित्त वर्ष में मध्यवर्ती सामान क्षेत्र की वृद्धि में निरंतर तेजी से हुई। इसके बाद पूंजी सामान क्षेत्र में सुदार हुआ जो अगस्त-नवंबर 2009 में

सारणी 1.6: विनिमार्ण उद्योग समूह का निष्पादन (अप्रैल-नवंबर 2009)

	ऋणात्मक	गिरावट	वृद्धि
	1	2	3
	1. पेय, तंबाकू और संबंधित उत्पाद 2. खाद्य उत्पाद 3. ऊन, रेशम और मानव निर्मित फायबर वस्त्र	1. जूट और अन्य वनस्पति फायबर वस्त्र (सूती छोड़कर) 2. रबर, प्लास्टिक, पेट्रोलियम और कोयला उत्पाद	1. मूल धातु और मिश्र धातु उद्योग 2. रबर, प्लास्टिक, पेट्रोलियम और कोयला उत्पाद 3. ऊन, रेशम और मानव निर्मित फायबर वस्त्र फायबर वस्त्र 4. परिवहन उपस्कर से भिन्न मशीनरी और उपकरण 5. अन्य विनिर्माण उद्योग 6. वस्त्र उत्पाद 7. रसायन और रसायन उत्पाद 8. लकड़ी और लकड़ी के उत्पाद, फर्निचर और जुड़नार 9. अधात्विक खनीज उत्पाद 10. सूती वस्त्र 11. चमड़ा और चमड़े तथा फर के उत्पाद 12. धातु उत्पाद और कलपूर्जे (मशीनरी और उपकरण छोड़कर)
आइआइपी में संयुक्त भारांक	**12.1**	**10.1**	**57.2**

चार्ट I.4: आइआइपी में विनिर्माण क्षेत्र का वृद्धि निष्पादन

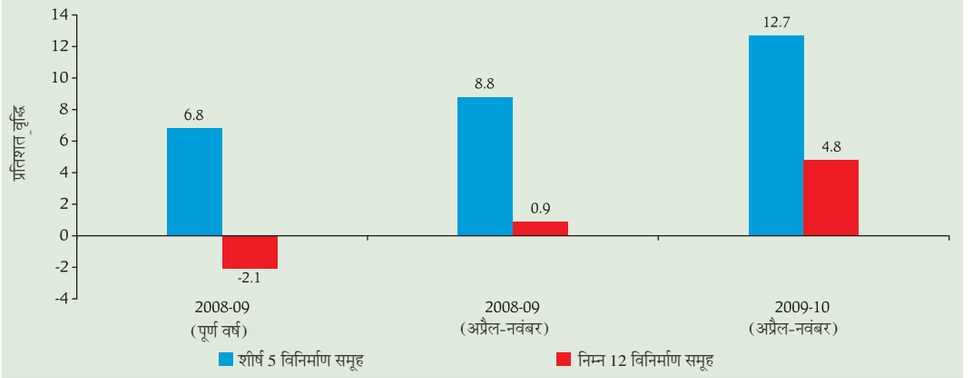

11.4 प्रतिशत था जबकि मार्च-मई 2009 में उत्पादन कम हुआ था जो निवेश भावना में सुधार दर्शाता है। उपभोक्ता गैर टिकाऊ सामान उत्पादन की वृद्धि में जुलाई 2009 से वृद्धि हुई बावजूद इसके कि खाद्य उत्पाद, पेय और तंबाकू उत्पाद और जूट तथा अन्य वनस्पति फायबर वस्त्रों (सूती छोड़कर) में गिरावट से कम भारांकित किया गया था। अप्रैल-नवंबर 2009-10 में उपभोक्ता सामान में समग्र वृद्धि आटोमोबाइल उत्पादन से आते योगदान के साथ उपभोक्ता घटक में तेज दो अंकी वृद्धि से प्रेरित थी।

बुनियादी ढांचा

I.9 कोर बुनियादी ढांचा वृद्धि अप्रैल-दिसंबर 2009 में 4.8 प्रतिशत पर उच्च थी जो गत वर्ष के समकाल में 3.2 प्रतिशत थी। इसमें सीमेंट, कोयला, बिजली उत्पादन और तैयार इस्पात में वृद्धि का योगदान था। तैयार इस्पात

चार्ट I.5: औद्योगिक वृद्धि - क्षेत्रीय प्रवृत्ति

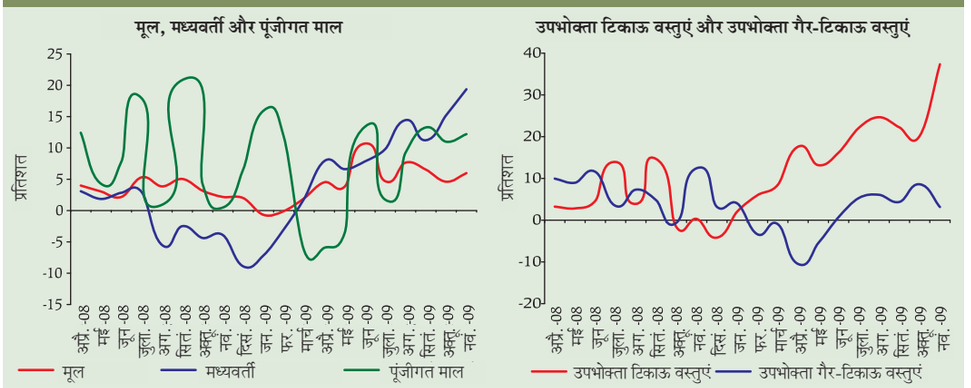

चार्ट I.6: बुनियादी ढांचा उद्योगों में वृद्धि (वर्ष-दर-वर्ष)

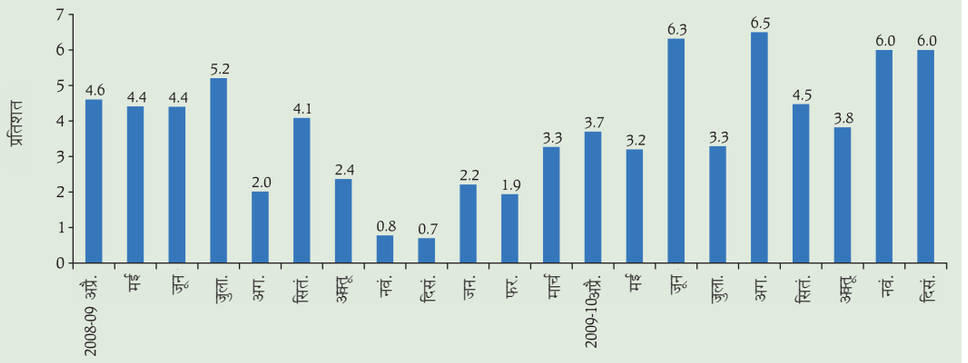

उत्पादन अक्तूबर-दिसंबर 2009 में बढ़ गया जो आंशिक रूप से आटोमोबाइल उत्पादन में सुधार और हाल के महीनों में निर्माण कार्य में तेजी के साथ ही एक वर्ष पूर्व इस्पात उत्पादन में कमी के आधार प्रभाव को दर्शाती है। कच्चे तेल और पेट्रोलियम शुद्धिकरण उत्पादों के उत्पादन में गत वर्ष के समकाल की तुलना में अप्रैल-दिसंबर 2009 में कमी आई। जबकि पेट्रोलियम उत्पाद घटक, जिसने अगस्त 2009 से कुछ सुधार देखा, दिसंबर 2009 में कम हो गया, वहीं कच्चा तेल क्षेत्र ने कुछ सुधार दर्ज किया और हाल के महीनों की कमी की प्रवृत्ति को उलट दिया (चार्ट I.6 और I.7)।

सेवा क्षेत्र

I.10 सेवा क्षेत्र की वृद्धि 2008-09 की पहली छमाही के 9.9 प्रतिशत से और 2008-09 की दूसरी छमाही के 8.9 प्रतिशत से कम होकर 2009-10 की पहली

चार्ट I.7: बुनियादी ढांचा उद्योगों में क्षेत्रवार वृद्धि

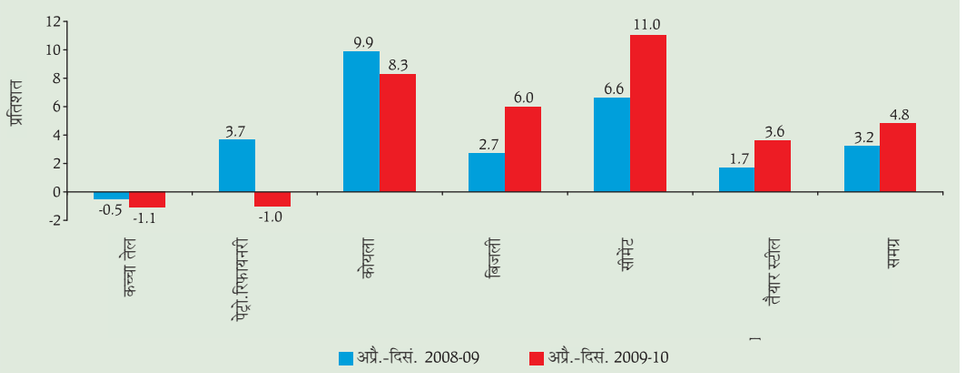

छमाही में 8.3 प्रतिशत रह गई। निर्माण और व्यापार, होटल, परिवहन और संचार वृद्धि में कमी ने मुख्यत: सेवा क्षेत्र की वृद्धि की समग्र कमी में योगदान दिया।

I.11 2009-10 की पहली छमाही में, 9.0 प्रतिशत में दूसरी तिमाही वृद्धि 7.7 की पहली तिमाही वृद्धि पर अच्छी बढ़त दिखाती है और पिछली कुछ तिमाहियों की निरंतर गिरावट में उलटाव भी दर्शाती है। 2009-10 की ति2 में ऊर्ध्वगामिता में मुख्य रूप से समुदाय, निजी और समाज सेवा उप समूह का योगदान था जो छठे वेतन आयोग के पंचाट के तहत सरकार द्वारा शेष राशि का भुगतान दर्शाता है। शेष राशि छोड़कर, सेवा क्षेत्र में वृद्धि 2009-10 की ति2 में 7.0 प्रतिशत होगी (चार्ट I.8)। 7.9 प्रतिशत की समग्र जीडीपी वृद्धि शेष राशि के समायोजित प्रभाव से 6.5 प्रतिशत पर कम होगी।

I.12 सेवा क्षेत्र कार्यों के मुख्य संकेतक दर्शाते हैं कि पर्यटक आगमन, समुद्री बंदरगाहों और हवाईअड्डों द्वारा हैंडल किया गया कार्गो और अंतरराष्ट्रीय टर्मिनलों द्वारा हैंडल किए गए यात्री जो बाहरी मांग पर निर्भर होते हैं, ने 2009-10 में अब तक वैश्विक आर्थिक स्थिति दिखाते हुए कमी या कम वृद्धि दर्शाई। किंतु, 2009 की तीसरी तिमाही में इन सेवाओं में काफी सुधार हुआ है। देशी मांग पर निर्भर सेवाओं ने 2009-10 में अब तक मजबूत और निरंतर वृद्धि दर्शाई (सारणी 1.7)।

I.13 सारांश में, 2009-10 की पहली दो तिमाहियों में जीडीपी वृद्धि में दिखी समग्र आपूर्ति स्थिति सुधार की तेज गति दर्शाती है जो औद्योगिक निष्पादन और राजकोषीय व्यय से प्रेरित सेवाओं से प्रभावित थी। कृषि क्षेत्र ने 2009-10 की दूसरी तिमाही में वृद्धि में कमी का अपेक्षा से कम क्रम देखा क्योंकि खरीफ उत्पादन पर कम दक्षिण-पश्चिम मानसून के प्रभाव का एक भाग ही ति2 जीडीपी अनुमान में रखा गया और शेष भाग 2009-10 की ति3 के लिए जीडीपी में दिखेगा। रबी उत्पादन की अनुकूल संभावना आंशिक रूप से कम खरीफ उत्पादन के मंद प्रभाव को संतुलित कर सकती है। औद्योगिक वृद्धि में सुधार सभी तीन क्षेत्रों अर्थात खनन, बिजली

चार्ट I.8: सेवा क्षेत्र की तिमाही वृद्धि की प्रवृत्ति

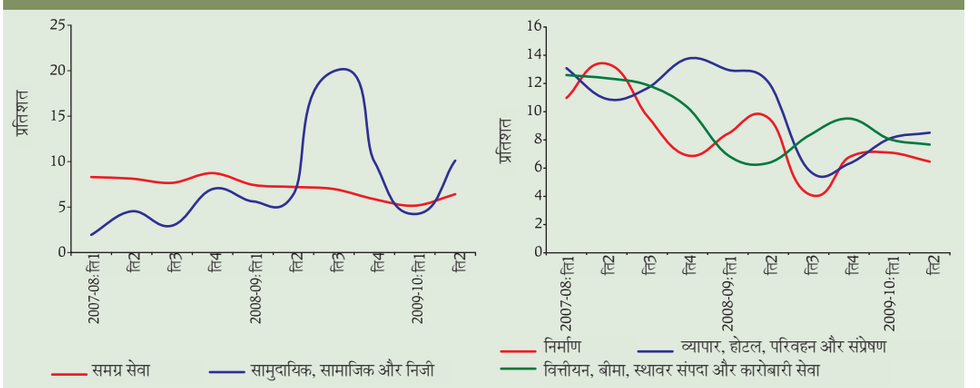

सारणी 1.7: सेवा क्षेत्र गतिविधियों के संकेतक

(प्रतिशत)

	2007-08	2008-09	अप्रैल-दिसंबर		2009-10		
			2008	2009	ति1	ति2	ति3
1	2	3	4	5	6	7	8
पर्यटकों का आगमन	12.2	-2.5	4.0	-3.3	-1.7	-4.0	6.5
वाणिज्यिक वाहनों का उत्पादन	4.8	-24.0	-16.0	15.1	-18.5	5.2	127.3
मालभाड़े से रेलवे को राजस्व	9.0	4.9	6.0	7.5	5.1	8.0	9.5
सेलफोन कनेक्शन *	38.3	44.8	63.5	56.5	59.4	52.4	60.1
मुख्य बंदरगाहों में कार्गो प्रबंध *	12	2.1	5.2	3.8	2.1	3.0	11.2
नागरिक उड्डयन *							
क) निर्यात कार्गो प्रबंध	7.5	3.4	7.0	3.5	0.5	1.9	17.6
ख) आयात कार्गो प्रबंध	19.7	-5.7	4.2	-7.1	-12.7	-4.9	3.1
ग) अंतरराष्ट्रीय टर्मिनल में यात्रियों का प्रबंध	11.9	3.8	7.5	3.2	0.1	3.7	11.3
घ) देशी टर्मिनल में यात्रियों का प्रबंध	20.6	-12.1	-8.5	10.8	-6.5	22.2	28.7
सीमेंट	8.1	7.2	6.6	11.0	12.1	12.6	8.5
इस्पात	6.2	1.6	1.7	3.6	1.7	1.7	7.8

*: अक्तूबर 2009 तक।

स्रोत : पर्यटन मंत्रालय; वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय; सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय; भारतीय रिज़र्व बैंक ।

और विनिर्माण में हाल के माहों में देखी गई तेज वृद्धि के समरूप रही है। कोर बुनियादी सेवा क्षेत्र ने भी अप्रैल-दिसंबर 2009 में गत वर्ष के समकाल की तुलना में उच्च वृद्धि दर्शाई। सेवा क्षेत्र के मुख्य संकेतक विशेष रूप से 2009-10 की ति2 से वृद्धि की तेजी में बढ़त दर्शाते हैं।